# ह्रदयमोहिनी दादीजी का संक्षिप्त परिचय

इस अलौकिक ब्राह्मण परिवार के बीच पारलौकिक शमा को बांधकर अलौकिक महफिल का गुल खिलाने वाली हम सबकी प्यारी गुलजार दादीजी को भला कौन नहीं जानता होगा । आपकी गभिरता एवं अन्तर्मुखता के साथ-साथ आपकी मधुर मुस्कान की माधुर्यता हमें बेहद में ले जाने की राह दिखा जाती है । आपकी सबसे बडी विशेषता - Innocency, जो पवित्रता एवं सरलता का शुद्ध मिश्रित गुण है - जिसके आधार पर ही स्वयं बापदादा ने आपको अपना रथ बनाना स्विकार किया । आपसे तो हमे सदा बापदादा की ही भासना आती है ।

हम सभी को तीन बाप तो है ही परन्तु क्या आप सभी जानते है ं की दादीजी को उन तीनों बाप द्वारा तीन नाम भी प्राप्त है, जी हाँ । उनका प्रायः लोप लौकिक नाम 'शोभा' है, अलौकिक बाबा-ब्रह्माबाबा का दिया हुआ प्यारा नाम है -'गुल्जार' एवं पारलौकिक बाबा-शिवबाबा का दिया हुआ नाम है 'ह्रदयमोहिनी' । 9 बर्ष की आयु में ही आप सिन्ध हैदराबाद में अपनी लौकिक माताजी के साथ ज्ञान में आई एवं इस बेहद यज्ञ की स्थापना के कार्य में आप बापदादा के मददगार बन गई । प्रारम्भ से ही आपका संदेशी का पार्ट चला आ रहा है ।

भारत में आपने सर्वप्रथम लखनउ में सेवारत रहे एवं वर्तमान समय आप विगत कई वषों से दिल्ली जोन की संचालिका है एवं इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय की आप सह-मुख्य प्रशासिका है । साथ ही साथ Rajyoga Education & Research Foundation के अन्तर्गत Business & Industrialists wing एवं Cultural Wing की आप Chairperson भी है । समय प्रति समय आपने न केवल सम्पूर्ण भारत अपितु विश्व के पाँचों खण्डों में आपने अपनी सेवाएँ प्रदान की है एवं करती रहती हैं । आपके दिव्य नैन आत्मा को नजर से निहाल कर देती है ।